International Journal of Scientific Research in Science and Technology
© 2018 IJSRST | Volume 4 | Issue 7 | Print ISSN: 2395-6011 | Online ISSN: 2395-602X

सरकारी एवं गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के संगठनात्मक वातावरण का तुलनात्मक अध्ययन

विजय बहादुर यादव
(शोधछात्र)
एम0ए0, एम0एड्0, नेट (शिक्षाशास्त्र)

शोध निर्देशिका
डॉ0 सुनीता गुप्ता
सीनियर असिस्टेन्ट प्रोफेसर
राजा श्रीकृष्ण दत्त पी0जी0 कालेज,
जौनपुर (उ0प्र0)

सारांश – प्रस्तुत अध्ययन में **''सरकारी एवं गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के संगठनात्मक वातावरण का तुलनात्मक अध्ययन'' किया गया है।** प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्ता ने सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया है। प्रस्तुत अध्ययन कार्य में शोधकर्ता ने साधारण यादृच्छिक प्रतिचयन विधि का उपयोग करके अध्ययन सम्बन्धित जनसंख्या से न्यादर्श का चयन किया। जौनपुर जनपद के जिला विद्यालय निरीक्षक कार्यालय द्वारा जिले के कुछ विद्यालयों तथा उनके अध्यापकों की सूची प्राप्त की, इस सूची में 10 विद्यालय थे। जिसमें 5 सरकारी एवं 5 गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालय थे। न्यादर्श के रूप में सरकारी विद्यालयों के 25 अध्यापकों तथा गैर सरकारी विद्यालयों के 25 अध्यापकों को लिया जो अपने जनसंख्या का प्रतिनिधित्व करते थे। प्रस्तुत शोध अध्ययन के उद्देश्यों तथा आवश्यकताओं के अनुसार सूचनाओं के संग्रह हेतु संज्योत पेठ, सुषमा चौधरी एवं उपेन्दर धर द्वारा निर्मित 'आर्गेनाइजेशनल क्लाइमेट स्केल (OCS)' का प्रयोग शोधकर्ता ने किया है। आंकड़ों के विश्लेषण के लिए शोधकर्ता ने प्रदत्तों के प्राप्तांकों का मध्यमान, मानक विचलन तथा टी–मान ज्ञात किया। अध्ययन के निष्कर्ष में पाया गया कि गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों का संगठनात्मक वातावरण, सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के संगठनात्मक वातावरण से अच्छा पाया गया क्योंकि गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के संगठनात्मक प्रतिक्रिया, भूमिका की स्पष्टता और आदान–प्रदान सरकारी माध्यमिक विद्यालयों की अपेक्षा अधिक अच्छा था। सरकारी एवं गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के मदद करने वाले व्यवहार में कोई अन्तर नहीं पाया गया।

की–वर्ड– सरकारी, गैर सरकारी, संगठनात्मक वातावरण, अध्यापक

प्रस्तावना

विद्यालय का संगठनात्मक पक्ष मुख्यतः उन व्यवस्थाओं से सम्बन्धित हैं, जो निर्धारित उद्देश्यों की प्राप्ति में सहायता देती है। विद्यालय संगठन के अन्तर्गत भौतिक एवम मानवीय तत्वों को साध्य की प्राप्ति के लिये उपलब्ध तथा सुव्यवस्थित किया जाता है। यदि एक विद्यालय की स्थापना करनी है तो उसके लिये स्थान, वातावरण, जल, भवन, फर्नीचर, शैक्षिक साज–सज्जा, शिक्षक एवं अन्य कर्मचारियों आदि का प्रबन्ध करना होगा। शिक्षा के चरित्र निर्माण के उद्देश्य की प्राप्ति के लिये इन तत्वों को सुव्यवस्थित करना होगा। शिक्षा के चरित्र निर्माण के उद्देश्य की प्राप्ति के लिये हमें विद्यालय में पाठ्यक्रम, सहगामी क्रियाओं, नैतिक वातावरण, सामाजिक क्रियाओं आदि का संगठन इस प्रकार करना होगा, जिससे बालकों का चरित्र निर्माण उचित दिशा में हो सके। उपयुक्त वातावरण निर्मित करने के लिये हमें योग्य एवं चरितवान शिक्षकों की नियुक्ति करनी होगी। विद्यालय संगठन वह संरचना है जिसमें शिक्षक, छात्र, प्रधानाध्यापक, परिनिरीक्षक तथा अन्य व्यक्ति विद्यालय की क्रियाओं को चलाने के लिये मिलकर कार्य करते हैं। शैक्षिक उद्देश्यों की प्राप्ति के लिये समस्त उपलब्ध भौतिक एवं मानवीय तत्वों की समुचित व्यवस्था करना विद्यालय का संगठन कहलाता है।

संगठन के अन्दर केवल व्यवस्था ही नहीं, वरन् विभिन्न विद्यालयों तत्वों में सामंजस्य या समन्वय स्थापित करना भी अनिवार्य हैं। सभी आवश्यक तत्वों का प्रबन्ध करके उनमें इस प्रकार समन्वय स्थापित किया जाना चाहिये जिससे निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति के लिये प्रत्येक तत्व का अधिकतम उपयोग कम से कम विघ्न एवं बाधा के अभाव में किया जा सके। यदि विभिन्न वस्तुओं के प्रयोग एवं उनके कार्यो में उचित समन्वय का अभाव है तो विद्यालय का कार्य सुचारू रूप से संचालित नहीं होगा। विद्यालय में पुस्तकों, पुस्तकालयाध्यक्ष एवं भवन आदि सभी का प्रबन्ध रहता है। परन्तु यदि पुस्तकों का उचित प्रकार से वर्गीकरण नहीं किया गया है और विद्यालय की समय तालिका में छात्रों को पुस्तकालय से पुस्तकें प्राप्त करने के लिये विशेष समय नहीं दिया गया हैं। अथवा बहुत बड़ी संख्या में छात्र एक ही समय में पुस्तकें पढ़ने व लेने हेतु पुस्तकालय में एकत्रित हो अथवा पुस्तकालयाध्यक्ष का इस कार्य के लिये नियत समय छात्रों की सुविधा के समय से भिन्न हो तो विद्यालय में पुस्तकालय सम्बन्धी समस्त सुविधायें एवं व्यवस्था होते हुये भी समन्वय के अभाव में पुस्तकालय का अधिकतम लाभ छात्रों को नहीं मिल पायेगा।

संगठन के अर्थ को समझने से स्पष्ट हो जाता हैं, कि संगठन को ही लक्ष्य न बनाया जाय। विद्यालय संगठन को तो एक ऐसे साधन के रूप में ग्रहण करना चाहिये कि अभीष्ट शैक्षिक लक्ष्यों की प्राप्ति की जा सकती हैं। इसको स्वयं में साध्य बनने की अनुमति नहीं दी जानी चाहिये, वरन् इसको सदैव उस लक्ष्य के अधीन रखा जाना चाहिये, जिसकी प्राप्ति के लिये नियोजन किया जा रहा है।

विद्यालयी वातावरण को प्रभावशाली बनाने में शिक्षकों एवं प्रधानाध्यापकों की योग्यता, व्यक्तित्व, शिक्षण दक्षता, नेतृत्व स्तर आदि महत्वपूर्ण भूमिक निभाते हैं। शिक्षकों की शिक्षण दक्षता, कक्षागत व्यवहार वातावरण को उत्कृष्ट व अधिगम जन्य बनाने में मदद करता है। शिक्षण दक्षता वास्तव में समग्र शिक्षण कौशलों तथा शिक्षण व्यूहों

के प्रभावशाली प्रयोग है जो अधिगम को सरल, रोचक एवं मनोरंजनपूर्ण बनाता है इसी के द्वारा छात्र और अध्यापक के मध्य अन्तःक्रिया होती है और एक मनोवैज्ञानिक वातावरण का सृजन होता है जो अधिगम प्रक्रिया को प्रभावशाली बनाती है।

वर्तमान में जहाँ सरकारी विद्यालयों की शिक्षा व्यवस्था किसी से छिपी नहीं है। सरकारी विद्यालयों में शिक्षकों द्वारा केवल अपने शिक्षण कार्यों से मतलब एवं अपने समय सीमा तक ही स्कूलों में समय दिया जाना साथ ही विद्यालय में आने वाले विद्यार्थियों पर विशेष ध्यान नही दिया जाता है वहीं विद्यालय के संगठनात्मक वातावरण पर भी विशेष ध्यान न देने के कारण सरकारी विद्यालयों में विद्यार्थियों की संख्या में लगातार गिरावट देखी जा सकती है और अभिभावकों द्वारा अपने बच्चों को निजी एवं पब्लिक विद्यालयों में भेजने की दृष्टिकोण में वृद्धि हुई है। वहीं निजी एवं गैर सरकारी विद्यालयों में पैसा कमाने की होड़ में विद्यार्थियों की संख्या में वृद्धि, विद्यार्थियों के उच्च एवं सुविधाजनक वातावरण, पुस्तकालय, प्रयोगशाला, शौचालय एवं प्रधानाचार्य के नेतृत्वशीलता एवं शिक्षकों के साथ अच्छे व्यवहार के साथ–साथ विद्यार्थियों के साथ अच्छा व्यवहार एवं विद्यार्थियों पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। पूर्व अध्ययन में **शर्मा, रंजना (2013)** ने शिक्षण संस्था की गतिविधियों में प्रबन्धन शैलियाँ प्रभावित करती है। अध्ययन में नौ प्रकार के द्वि–ध्रुवीय प्रबन्धन शैलियों को चिन्हित किया जिसमें उत्तरदायित्वपूर्ण बनाम उत्तरदायित्वमुक्त, व्यक्ति उन्मुख बनाम समूह उन्मुख, अभिप्रेरणा बनाम गैर अभिप्रेरणा, क्षेत्र स्वतंत्र बनाम क्षेत्र आधारित, हस्तक्षेप प्रधान बनाम अहस्तक्षेप प्रधान, सहभागिता युक्त बनाम सहभागिता मुक्त, प्रक्रिया उन्मुख बनाम परिणाम उन्मुख, अन्तःक्रियात्मक बनाम गैर अन्तःक्रियात्मक तथा केन्द्रीकृत बनाम विकेन्द्रीकृत प्रबन्धन शैलियाँ विद्यालय के प्रबन्धन में उपयोगी सिद्ध हो सकती है। **रजा, सैय्यद अहमद (2010)** ने अध्ययन के निष्कर्ष में पाया गया कि– पब्लिक कालेजों के प्राचार्यों के खुले विचार, आदर, शिक्षकों के मध्य आपसी व्यवहार, प्राचार्य के साथ सुरक्षात्मक व्यवहार का शिक्षकों के प्रदर्शन के मध्य सार्थक एवं सकारात्मक सम्बन्ध पाया गया। **भट्ट, एम0एस. एवं मीर, एस.एस. (2018)** ने अध्ययन के निष्कर्ष में पाया गया कि– निजी विद्यालयों के संगठनात्मक वातावरण सरकारी विद्यालयों की अपेक्षा उच्च पाया गया। **अग्रवाल, श्वेता (2015)** ने अध्ययन के निष्कर्ष में पाया कि– उच्चतर माध्यमिक बालिका विद्यालयों के कुल संगठनात्मक वातावरण एवं इसके विविध परिणाम, पुरस्कार व्यवस्था, अन्तःव्यक्ति सम्बन्ध, सूचनाओं का आदान–प्रदान बालक विद्यालयों की अपेक्षा उच्च पाया गया जबकि संगठनात्मक वातावरण के आयाम परोपकारी दोनों प्रकार के विद्यालयों में समानता पायी गयी।

वर्तमान शिक्षा व्यवस्था को देखते हुए अध्ययनकर्त्ता द्वारा अपने विषय का चुनाव एक ही स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों के संगठनात्मक वातावरण के बीच अन्तर को देखने का प्रयास किया गया है।

समस्या कथन–

''सरकारी एवं गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के संगठनात्मक वातावरण का तुलनात्मक अध्ययन।''

अध्ययन का उद्देश्य–

1. **सरकारी एवं गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के संगठनात्मक वातावरण का तुलनात्मक अध्ययन करना।**
2. सरकारी एवं गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में परिणाम, पुरस्कार तथा अन्तर वैयक्तिक सम्बन्ध का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. सरकारी एवं गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के संगठनात्मक प्रक्रिया का तुलनात्मक अध्ययन करना।
4. सरकारी एवं गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में भूमिका की स्पष्टतः और सूचनाओं में आदान–प्रदान का तुलनात्मक अध्ययन करना।
5. सरकारी एवं गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में मदद करने वाले व्यवहार का तुलनात्मक अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पनाएँ–

1. सरकारी एवं गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के संगठनात्मक वातावरण में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. सरकारी एवं गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में परिणाम, पुरस्कार तथा अन्तर वैयक्तिक सम्बन्ध क में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
3. सरकारी एवं गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के संगठनात्मक प्रक्रिया में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
4. सरकारी एवं गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में भूमिका की स्पष्टतः और सूचनाओं में आदान–प्रदान में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
5. सरकारी एवं गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में मदद करने वाले व्यवहार में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

शोध प्रविधि–

प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्ता ने सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया है। प्रस्तुत अध्ययन कार्य में शोधकर्ता ने साधारण यादृच्छिक प्रतिचयन विधि का उपयोग करके अध्ययन सम्बन्धित जनसंख्या से न्यादर्श का चयन किया। अध्ययनकर्ता सम्बन्धित जनसंख्या से न्यादर्श का चुनाव करने हेतु सर्वप्रथम जौनपुर जनपद के जिला विद्यालय निरीक्षक कार्यालय द्वारा जिले के कुछ विद्यालयों तथा उनके अध्यापकों की सूची प्राप्त की, इस सूची में 10 विद्यालय थे। जिसमें 5 सरकारी एवं 5 गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालय थे। इसके बाद विद्यालयों के अध्यापकों के नाम अलग–अलग पर्ची पर लिखकर उन्हें डिब्बे में बन्द करके उसे घुमाकर आवश्यकतानुसार पर्ची उठा लिये और उन्हें न्यादर्श के रूप में सम्मिलित कर लिया। इसी प्रकार महिला अध्यापकों के नाम अलग–अलग पर्ची पर लिखकर उन्हें डिब्बे में बन्द करके उसे घुमाकर आवश्यकतानुसार पर्ची उठा लिये और उन्हें न्यादर्श के रूप में सम्मिलित कर लिया। न्यादर्श के रूप में सरकारी विद्यालयों के 25 अध्यापकों तथा गैर सरकारी विद्यालयों के 25 अध्यापकों को लिया जो अपने जनसंख्या का प्रतिनिधित्व करते थे। प्रस्तुत शोध अध्ययन के उद्देश्यों तथा आवश्यकताओं के अनुसार सूचनाओं के संग्रह हेतु संज्योत पेठ, सुषमा चौधरी एवं उपेन्दर धर द्वारा निर्मित 'आर्गेनाइजेशनल क्लाइमेट स्केल (OCS)' का प्रयोग शोधकर्ता ने किया है। आंकड़ों के विश्लेषण के लिए शोधकर्ता ने प्रदत्तों के प्राप्तांकों का मध्यमान, मानक विचलन तथा टी–मान ज्ञात किया।

परिकल्पनाओं का परीक्षण

H_1 सरकारी एवं गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के संगठनात्मक वातावरण में सार्थक अन्तर है।

H_{01} सरकारी एवं गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के संगठनात्मक वातावरण में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी संख्या –1

सरकारी एवं गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के वातावरण सम्बन्धी प्राप्तांकों का मध्यमान, मानक विचलन, तथा t-मान

क्रमांक	विद्यालयों के प्रकार	शिक्षकों की संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	t-मान	सार्थकता स्तर
1.	सरकारी	25	85.16	6.41	6.80	0.01
2.	गैर सरकारी	25	100.68	9.12		

तालिका के अवलोकन से स्पष्ट है कि CR का परिकलित मान 6.80 है जो कि सार्थक स्तर .01 तथा मुक्तांश 48 के सारणी मान 2.68 से अधिक है अर्थात् मध्यमानों में सार्थक अन्तर है अतः शून्य परिकल्पना (H_{01}) अस्वीकृत तथा शोध परिकल्पना (H_1) स्वीकृत होती है अर्थात् सरकारी एवं गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के संगठनात्मक वातावरण भिन्नता थी।

H_2 सरकारी एवं गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में परिणाम, पुरस्कार तथा अन्तर वैयक्तिक सम्बन्ध में सार्थक अन्तर है।

H_{02} सरकारी एवं गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में परिणाम, पुरस्कार तथा अन्तर वैयक्तिक सम्बन्ध में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी संख्या – 2

सरकारी एवं गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में परिणाम, पुरस्कार तथा अन्तर वैयक्तिक सम्बन्धी प्राप्तांकों का मध्यमान, मानक विचलन, तथा t-मान

क्रमांक	विद्यालयों के प्रकार	शिक्षकों की संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	t-मान	सार्थकता स्तर
1.	सरकारी	25	36.36	4.09	3.53	सार्थक
2.	गैर सरकारी	25	41.76	6.31		

तालिका के अवलोकन से स्पष्ट है कि CR का परिकलित मान 3.53 है जो कि सार्थक स्तर .01 तथा मुक्तांश 48 के सारणी मान 2.68 से अधिक है अर्थात् मध्यमानों में सार्थक अन्तर है अतः शून्य परिकल्पना (H_{02}) अस्वीकृत

तथा शोध परिकल्पना (H_2) स्वीकृत होती है अर्थात् सरकारी एवं गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में परिणाम, पुरस्कार तथा अन्तर वैयक्तिक सम्बन्ध में भिन्नता थी।

H_3 सरकारी एवं गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के संगठनात्मक प्रक्रिया में सार्थक अन्तर है।

H_{03} सरकारी एवं गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के संगठनात्मक प्रक्रिया में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी संख्या – 3

सरकारी एवं गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के संगठनात्मक प्रक्रिया सम्बन्धी प्राप्तांकों का मध्यमान, मानक विचलन, तथा t-मान

क्रमांक	विद्यालयों के प्रकार	शिक्षकों की संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	t-मान	सार्थकता स्तर
1.	सरकारी	25	30.64	3.74	5.18	.01
2.	गैर सरकारी	25	40.96	8.99		

तालिका के अवलोकन से स्पष्ट है कि CR का परिकलित मान 5.18 है जो कि सार्थक स्तर .01 तथा मुक्तांश 88 के सारणी मान 2.68 से अधिक है अर्थात् मध्यमानों में सार्थक अन्तर है अतः शून्य परिकल्पना (H_{03}) अस्वीकृत तथा शोध परिकल्पना (H_3) स्वीकृत होती है अर्थात् सरकारी एवं गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के संगठनात्मक प्रक्रिया में सार्थक अन्तर है।

H_4 सरकारी एवं गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में भूमिका की स्पष्टतः और सूचनाओं में आदान–प्रदान में सार्थक अन्तर है।

H_{04} सरकारी एवं गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में भूमिका की स्पष्टतः और सूचनाओं में आदान–प्रदान में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी संख्या – 4

सरकारी एवं गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में भूमिकाओं की स्पष्टता और सूचनाओं के आदान–प्रदान सम्बन्धी प्राप्तांकों का मध्यमान, मानक विचलन, तथा t-मान

क्रमांक	विद्यालयों के प्रकार	शिक्षकों की संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	t-मान	सार्थकता स्तर
1.	सरकारी	25	14.56	2.50	2.34	.05
2.	गैर सरकारी	25	16.92	4.26		

तालिका के अवलोकन से स्पष्ट है कि CR का परिकलित मान 2.42 है जो कि सार्थक स्तर .05 तथा मुक्तांश 48 के सारणी मान 2.01 से अधिक है अर्थात् मध्यमानों में सार्थक अन्तर है अतः शून्य परिकल्पना (H_{04}) अस्वीकृत तथा शोध परिकल्पना (H_4) स्वीकृत होती है अर्थात् सरकारी एवं गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में भूमिकाओं की स्पष्टता और सूचनाओं के आदान–प्रदान में सार्थक अन्तर है।

H_5 सरकारी एवं गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में मदद करने वाले व्यवहार में सार्थक अन्तर है।

H_{05} सरकारी एवं गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में मदद करने वाले व्यवहार में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी संख्या – 5

सरकारी एवं गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में मदद करने वाले व्यवहार सम्बन्धी प्राप्तांकों का मध्यमान, मानक विचलन, तथा t-मान

क्रमांक	विद्यालयों के प्रकार	शिक्षकों की संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	t-मान	सार्थकता स्तर
1.	सरकारी	25	3.60	0.82	0.98	सार्थक नहीं
2.	गैर सरकारी	25	4.00	1.85		

तालिका के अवलोकन से स्पष्ट है कि CR का परिकलित मान 1.20 है जो कि सार्थक स्तर .05 तथा मुक्तांश 48 के सारणी मान 2.01 से कम है अर्थात् मध्यमानों में सार्थक अन्तर नहीं है अतः शून्य परिकल्पना (H_{05}) स्वीकृत तथा शोध परिकल्पना (H_5) अस्वीकृत होती है अर्थात् सरकारी एवं गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में मदद करने वाले व्यवहार में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

परिणाम–

1– गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों का संगठनात्मक वातावरण सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के संगठनात्मक वातवारण से उच्च पाया गया।

2– सरकारी एवं गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के परिणाम पुरस्कार तथा अन्तर वैयक्तिक सम्बन्ध में कोई अन्तर नहीं पाया गया।

3– गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों की संगठनात्मक प्रक्रिया सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के संगठनात्मक प्रक्रिया की अपेक्षा उच्च पायी गयी।

4– गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में भूमिका की स्पष्टता और सूचनाओं के आदान–प्रदान, सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में भूमिका की स्पष्टता और सूचनाओं के आदान–प्रदान से अधिक पायी गयी।

5– सरकारी एवं गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में मदद करने वाले व्यवहार में कोई अन्तर नहीं पाया गया।

परिणामों की व्याख्या

गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों का संगठनात्मक वातावरण, सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के संगठनात्मक वातावरण से अच्छा पाया गया क्योंकि गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के संगठनात्मक प्रतिक्रिया, भूमिका की स्पष्टता और आदान–प्रदान सरकारी माध्यमिक विद्यालयों की अपेक्षा अधिक अच्छा था।

सरकारी एवं गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के मदद करने वाले व्यवहार में कोई अन्तर नहीं पाया गया क्योंकि इन क्षेत्रों में दोनों ही प्रकार के विद्यालयों का स्तर समान था। गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों की संगठनात्मक प्रक्रिया सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के संगठनात्मक प्रक्रिया की अपेक्षा अच्छी पायी गयी क्योंकि गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालय में सरकारी माध्यमिक विद्यालय की अपेक्षा किसी भी समस्या के सम्बन्ध में निर्णय लेने से पहले लोग एक दूसरे की योग्यता में विश्वास रखते थे जबकि सरकारी माध्यमिक विद्यालय के संगठनात्मक प्रक्रिया इन तथ्यों का अभाव है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- कपिल, एच0के0 (1991) सांख्यिकी के मूल तत्व, आगरा : विनोद पुस्तक मन्दिर।
- गुप्ता, एस0पी0 तथा अलका गुप्ता (2007) व्यवहारपरक विज्ञानों में सांख्यिकीय विधियाँ, इलाहाबाद : शारदा पुस्तक भवन।
- सुखिया, एस0पी0 तथा अन्य (1991) शैक्षिक अनुसंधान के मूलतत्व, आगराः विनोद पुस्तक मन्दिर।
- शर्मा, रंजना (2013). संस्था प्रधान एवं उनकी प्रबन्ध शैलियाँ, इण्टरनेशनल जर्नल ऑफ क्रियेटिव रिसर्च थॉट, वॉ0 1, इश्शू 3, पृ0 1–9
- रजा, सैय्यद अहमद (2010). इम्पैक्ट ऑफ आर्गनाइजेशनल क्लाइमेट ऑफन परफार्मेन्स ऑफ कॉलेज टीचर्स इन पंजाब, जर्नल ऑफ कॉलेज टीचिंग एण्ड लर्निंग, वॉ0 7, नं0 10, पृ0 47–52
- भट्ट, एम.एस. एण्ड मीर, एस.ए. (2018). परसिव्ड स्कूल क्लाइमेट एण्ड एकेडमिक एचिवमेण्ट ऑफ सेकेण्डरी स्कूल स्टूडेन्ट्स इन रिलेशन टू देयर जेण्डर एण्ड टाइप ऑफ स्कूल, इण्टरनेशनल जर्नल ऑफ एडवांस एजुकेशनल रिसर्च, वॉ0 3, इश्शू–2, पृ0 620–628
- अग्रवाल, श्वेता (2015). उच्च माध्यमिक बालक एवम् बालिकाओं के संगठनात्मक वातावरण का शिक्षकों की शिक्षक प्रभावशीलता पर प्रभाव का अध्ययन, जर्नल ऑफ एजुकेशनल एण्ड साइकोलॉजिकल रिसर्च, वॉ0 6, नं0 2, पृ0 270–275